



गांति जिनेश्वर साचो साहेब,  
गांतिकरण इन कस्मिं हो

जिणजी...

मुनो गांतिजिणंद सोभागी,  
हैं तो ययो छुं तुम गुणरागी...

जंबूद्वीप भरतक्षेत्र के हस्तिनापुर नगर के इक्ष्वाकुवंशी विश्वसेन राजा और अचिरादेवी महारानी थी।

भाद्रपक्ष की कृष्ण सप्तमी को जब चन्द्र भरणी नक्षत्र में था तब मुनि मेघरथ का जीव च्यवन कर अचिरादेवी की कुक्षि में अवतरित हुआ। माता ने चौदह स्वप्नों को अपने मुख में प्रवेश होते देखा। तीनों लोक में प्रकाश जगमगा उठा। मनुष्य लोक में आनन्द की हवा बहने लगी।

एक बार हस्तिनापुर में भयंकर महामारी फैल गई। प्रतिदिन हजारों लोग मरने लगे। यह देख विश्वसेन राजा विचलित हो गये। उन्होंने प्रतिज्ञा कि “जब तक प्रजा का उपद्रव शान्त नहीं होगा, मैं अन्न जल ग्रहण नहीं करूंगा।” इस भीष्म प्रतिज्ञा से द्रवित होकर शक्रेन्द्र ने स्वयं उपस्थित होकर राजा से कहा ‘महाराज! आप व्यर्थ विचलित न हो। जहाँ चिन्तामणिरत्न, कल्पतरु एवं कामधेनु विद्यमान हैं, वहाँ किस बात की कमी? महारानी अचिरादेवी के उदर में साक्षात् शांति अवतार भगवान का जीव पल रहा है।’ इन्द्र ने गर्भस्थ भावी तीर्थंकर का शांति स्तोत्र पाठ किया और कहा ‘महारानी महल की छत पर खड़ी होकर स्वयं इस शांति स्तोत्र का पाठ करें और फिर जनपद पर अपनी अमृत दृष्टि डालें, जहाँ तक माता की अमिटदृष्टि पहुँचेगी, उसके प्रभाव से समस्त उपद्रव, रोग, पीड़ाएँ शान्त हो जाएंगी और ऐसा ही हुआ।’

नौ मास साढ़े सात दिन बीत जाने पर ज्येष्ठ मास की कृष्ण त्रयोदशी के दिन भरणी नक्षत्र में अचिरादेवी ने मृग चिह्न वाले कनकवर्णी पुत्र को जन्म दिया। प्रभु के जन्म लेते ही तीनों लोक प्रकाशित हो गये। छप्पन दिक्कुमारियों ने सूतिका कर्म किया चौंसठ इन्द्रों ने मेरुपर्वत पर भगवान का जन्माभिषेक किया। प्रभु जब माता के गर्भ में थे, उस समय देश में महामारी एकदम शांत हो गई थी, इसीलिए राजा ने उनका नाम ‘शान्तिनाथ’ रखा। राजकुमार शान्तिनाथ चालीस धनुष प्रमाण कायावाले थे। चक्रवर्ती होने से आपका अनेक राजकन्याओं से विवाह हुआ। राजा विश्वसेन ने पच्चीस हजार वर्ष की आयु में युवराज शान्तिनाथ को राज्य सौंप चारित्र्य ग्रहण कर लिया।

एक बार शान्तिनाथ प्रभु की अश्वशाला में दिग्विजय सूचक ‘सुदर्शन चक्र’ उत्पन्न हुआ। चौदहतरनों एवं नवनिधियों के द्वारा शान्तिनाथ महाराज ने छह खंडों पर विजय प्राप्त की। राजा शान्तिनाथ को देवों एवं राजाओं ने चक्रवर्ती पद प्रदान किया। आपने आठ सौ वर्ष कम पच्चीस हजार वर्ष तक चक्रवर्ती पद पर रहते हुए राज्य किया।

वैराग्यवासित होने पर राज्यभार अपने पुत्र चक्रायुध को सौंप कर ज्येष्ठ वदि चतुर्दशी को भरणी नक्षत्र में एक हजार राजाओं के साथ दीक्षा ग्रहण की। उसी समय प्रभु को मनःपर्यवज्ञान की प्राप्ति हुई। एक वर्ष तक छद्मावस्था में विहार करते हुए प्रभु हस्तिनापुर पधारे, उद्यान में नंदीवृक्ष के नीचे कायोत्सर्ग मुद्रा में तीन हो गए। पौष मास की शुक्ल नवमी के दिन भरणी नक्षत्र में चारों घाती कर्मों का शय्य होने से प्रभु को केवलज्ञान उत्पन्न हुआ। इसके बाद प्रभु 24,999 वर्षों तक इसी पृथ्वी पर विचरण करते रहे। निर्वाण समय नजदीक जानकर प्रभु शान्तिनाथ सम्मैतशिवरजी पधारे। कर्म निःशेष होने पर ज्येष्ठ मास की कृष्ण त्रयोदशी के दिन भरणी नक्षत्र में परम सिद्धि (मोक्ष) पद का वरण किया।



SCAN QR CODE